Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-9(A)| September 2025

Original Article

कृषि एवं पशुपालनः एक भौगोलिक अध्ययन (ग्राम- समुद्राल, जिला- उस्मानाबाद, महाराष्ट्र के विशेष संदर्भ में)

डॉ.काबले डी. एस
सहयोगी प्राध्यापक भूगोल, जवाहर कला विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय, अणदूर (महाराष्ट्र)
Email-Kambleds19@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2025-170918
ISSN: 2230-9578
Volume 17
Issue 9(A)
Pp.87-92
September 2025
Submitted:23 Aug. 2025
Revised: 4 Sept. 2025
Accepted: 21 Sept. 2025
Published: 30 Sept. 2025

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र "समुद्राल " महाराष्ट्र राज्य के उस्मानाबाद जिला के उमरगा तहसील के अंतर्गत आता है। ग्राम 'समुद्राल' की कुल जनसंख्या 1412 है जिसमें पुरुषों की जनसंख्या 736 तथा महिलाओं की जनसंख्या 676 है। सामाजार्थिक अध्ययन हेतु 30 परिवार का अध्ययन किया गया। सर्वेक्षित ग्राम में अनुसूचित जनजाति वर्ग के लोगो की संख्या अधिक है। यहां के परिवारों का मुख्य व्यवसाय कृषि है। सिंचाई सुविधा का अभाव, प्रति एकड़ उत्पादन में कमी, वैज्ञानिक एवं उन्नत कृषि का अभाव ग्राम के लोगो की आर्थिक स्थिति को प्रभावित करता है। अर्थ उपार्जन एवं कृषि कार्य हेतु पशुपालन भी किया जाता है।

मूल शब्द (की वर्ड) : *कृषि एवं पशुपालन, उस्मानाबाद, महाराष्ट्र आदि।*

प्रस्तावना :

भूगोल के संकल्पनात्मक इतिहास के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि क्षेत्रीय अध्ययन, भूगोल की मूल संकल्पना को विकसित करने में सहायक रहा है। भारत में क्षेत्रीय अध्ययन की परम्परा अत्यंत प्राचीनकाल से विद्यमान रही है। प्राचीनकाल में वेदो एवं विभिन्न महाकाव्यों, कथानकों में विभिन्न प्रदेशों का यथार्थपरक विश्लेशण वास्तव में गहन क्षेत्रीय अध्ययन का परिणाम रहे। वास्तव में क्षेत्रीय अध्ययन के महत्व के कारण ही भूगोल को एक क्षेत्रीय विज्ञान माना जाता है।' किसी भी क्षेत्र के समग्र विकास में उस क्षेत्र की जनसंख्या की क्रियाशीलता अनिवार्य है।

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र "समुद्राल" उमरगा विकासखण्ड, जिला- उस्मानाबाद, महाराष्ट्र में कृषि व पशुपालन के माध्यम से ग्राम की सामाजिक आर्थिक स्थिति एवं ग्राम की समस्याओं का अवलोकन एवं अनुसंधान प्रासंगिक एवं अपरिहार्य हो जाता है। यह शोध पत्र इन्ही पहलुओ पर केन्द्रित है।

अध्ययन क्षेत्र :

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र,महाराष्ट्र राज्य के उस्मानाबाद जिले के उमरगा विकासखण्ड ग्राम समुद्राल है। यह जिला मुख्यालय से 76 कि.मी. दक्षिण दिशा में स्थित है। उमरगा विकासखण्ड में 98 ग्राम है। इसके उत्तर में कोंडजीगड और होली, पूर्व में पेठसांगावी, पश्चिम में कलदेव निंबाला एवं दक्षिण में कडदोरा गाव की सीमा लगी हुई है। यह क्षेत्र कृषि प्रधान है। यहां कृषि जीविकोपार्जन एवं व्यापार के लिये की जाती है। उमरगा, निलंगा, तुलजापुर और लातूर समुद्राल के नजदीकी शहर है।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
डॉ. काबले डी. एस, सहयोगी प्राध्यापक भूगोल, जवाहर कला विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय, अणदूर (महाराष्ट्र)

How to cite this article:
एस, . काबले . डी . (2025). कृषि एवं पशुपालनः एक भौगोलिक अध्ययन (ग्राम- समुद्राल, जिला- उस्मानाबाद, महाराष्ट्र के विशेष संदर्भ में). Journal of Research and Development, 17(9(A)), 87–92.
https://doi.org/10.5281/zenodo.17510606

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.17510606
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-9(A)| September 2025

स्थिति एवं विस्तार :

चयनित ग्राम "समुद्राल " का विस्तार उस्मानाबाद से 17° 96′ उत्तरी अक्षांश तथा 76° 53' पूर्वी देशांतर के मध्य है। इसके चारों ओर उमरगा विकासखण्ड का शेष भाग फैला हुआ है।

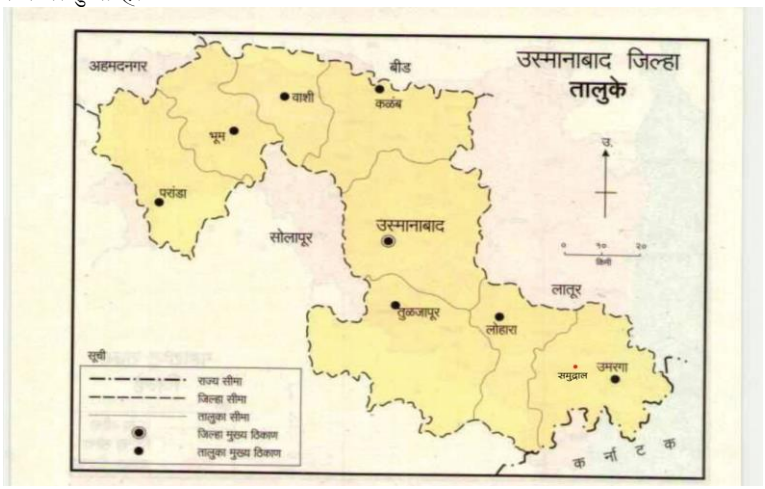

ग्राम-समुद्राल

आंकड़े एवं विधितंत्र :

अध्ययन प्राथमिक एवं द्वित्तीयक आंकड़ो पर आधारित है। प्राथमिक आंकड़ो का सृजन व्यक्तिगत ग्राम सर्वेक्षण पर आधारित है जबकि द्वित्तीयक आंकड़ो का संकलन पटवारी रिकार्ड से किया गया है संकलित आंकड़ों का प्रतिशत मान ज्ञात कर छायांकन मानचित प्रदर्शित किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य :

ग्राम-समुद्राल की सामाजिक और आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना तथा अध्ययन क्षेत्र, भौतिक दृष्टी से निवास क्षेत्र के अन्य समरूप होते हुऐ भी स्थैतिक दूरी के कारण व्याप्त अनेक स्थलाकृत्ति, सूक्ष्म भेदो भौतिक एवं सांस्कृतिक पक्षों का वैज्ञानिक अध्ययन करना मुख्य उद्देश्य रहा है।

कृषि की परिभाषाएँ :

1. भूमि का जमीन को जोतकर, बीज बोने और फसल उत्पादन करने का कार्य कृषि कहलाता है।

2. फसले पैदा कारने के उद्देश्य से मिट्टीयो को खोदने का कार्य कृषि कहालता है।

सर्वेक्षित ग्राम-समुद्राल में कृषि मुख्य रूप से वर्षा पर आश्रित है। यहां कृषि कार्य अधिकतर परम्परागत ढंग से छिड़का विधि द्वारा हल चलाकर किया जाता है। बदलते दौर के साथ-साथ यहां आधुनिक कृषि प्रणाली प्रसार भी हो रहा है। कहीं- कही आधुनिक उपकरणों का प्रयोग भी किया जा रहा है।

ग्राम-समुद्राल कृषिभूमि (2021-22)

अ.क्र.	कृषि भूमि एकड़ में	परिवार कि संख्या	प्रतिशत	जनसंख्या	प्रतिशत
1	भूमिहीन	05	16.66	26	10.4
2	2 से कम	10	33.34	80	32.00
3	2 से 5	12	40.00	110	44.00
4	5 से अधिक	03	10.00	34	13.6
5	योग	30	100.00	250	100.00

स्त्रोत : व्यक्तिगत सर्वेक्षण

उपरोक्त सारिणी से स्पष्ट होता है कि ग्राम समुद्राल में भूमिहीन परिवार ही संख्या का प्रतिशत 16.66 है जिसमें 10.4 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। 2 से कम 33.34 प्रतिशत परिवार है जिसमें 32.00 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। 2 से 5 एकड़ में 40.00 प्रतिशत परिवार है जिसमें 44.00 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है तथा 5 से अधिक जिनके पास जमीन है उन

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-9(A)| September 2025

परिवारों का प्रतिशत 10.00 है जिसमें 13.6 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। यहां सभी लोगों के पास लगभग कृषि भूमि है। उपरोक्त सारिणी से स्पष्ट होता है कि 33.34 परिवार के पास 2 एकड़ से कम भूमि है तथा 10.00 प्रतिशत परिवार के पास 5 एकड़ से अधिक भूमि है। इनकी संख्या गांव में सबसे कम है। यें सम्पन्न वर्ग के लोग है।

सर्वेक्षित ग्राम समुद्राल के कृषि भूमि के आधार पर किसानों को तीन वर्गो सें रखा गया है। जो इस प्रकार है-

1. निम्न वर्ग के किसान: ऐसे वर्ग के अंतर्गत वे किसान आते है जिनके पास 2 एकड़ से कम कृषि भूमि है अध्ययन क्षेत्र के 32.00 प्रतिशत लोग इस वर्ग में आते है।

2. मध्यम वर्ग के किसान: इसके अंतर्गत वे किसान आते है जिनके पास 2 से 5 एकड़ तक कृषि भूमि है सर्वेक्षित ग्राम समुद्राल में 44.00 प्रतिशत किसान इस वर्ग में आते है।

3. उच्च वर्ग के किसान: ऐसे किसान जिनके पास 5 एकड़ से अधिक कृषि भूमि है उसे उच्च वर्ग के किसान के अंतर्गत रखा गया है। इसके अंतर्गत मात्र 13.6 प्रतिशत किसान आते है।

सर्वेक्षित ग्राम-समुद्राल की लगभग सर्वाधिक जनसंख्या कृषि में सलंग्न है यहां का कृषि कार्य संतोशजनक है। उच्चवर्ग के किसान कृषि कार्य में आधुनिक पद्धत्ति अपनाते जा रहे है। समुद्राल ग्राम में वन भूमि, अमरूद, केला, झाड़ी के झुंड तथा बाग का पूर्णतः अभाव है। यहां की कुल भूमि का 8.14 हेक्टेयर चारागाह,पड़ती 10.44 हेक्टेयर, कृषि भूमि 80.19 हेक्टेयर तथा दो फसली क्षेत्र 40.01 हेक्टेयर है।

ग्राम-समुद्राल सिंचाई के साधन

अ.क्र.	साधन	सिंचाई क्षेत्रफल (हेक्टेयर में)	प्रतिशत
1	बांध	2.40	5.66
2	तालाब	22.60	20.66
3	ट्यूबवेल	20.25	22.33
4	कुआँ	45.60	51.35
योग		90.85	100.00

स्त्रोत : व्यक्तिगत सर्वेक्षण

सर्वेक्षित ग्राम-समुद्राल में सिंचाई सुविधा अपर्याप्त है। यहां कुल कृषि क्षेत्रफल के 90.85 हेक्टेयर क्षेत्रफल में तालाब, ट्यूब वेल, बांध व कुएं की सहायता से सिंचाई कर कृषि की जाती है। 66.20 हेक्टेयर कृषि भूमि असिंचित रहती है। ग्राम समुद्राल के कुल निराफसली भूमि के 59.06 प्रतिशत भूमि पर उड़द, मुग और धान बोया जाता है। उड़द यहां की प्रमुख फसल है। प्रमुख रूप से मोटा धान बोया जाता है। पतला धान कुछ ही क्षेत्रफल में बोया जाता है। रबी फसल के अंतर्गत प्रमुख रूप से ज्वार,चना बोया जाता है 2.75 हेक्टेयर भूमि पर करडई बोया जाती है।

उर्वरकों का उपयोग :

पोशक तत्व की दृष्टी से कोई भी मिट्टी अपने आप में पूर्ण नही होती है। खाद के यथेश्ट प्रयोग से उत्पादन की मात्रा दुगुनी तक की जा सकती है। ग्राम समुद्राल में रासायनिक उर्वरकों की खपत निम्नलिखित सारिणी द्वारा स्पष्ट है:

ग्राम-समुद्राल उर्वरकों का प्रयोग (2021-22)

अ.क्र.	उर्वरकों का नाम	प्रतिशत कि.ग्रा./एकड़	प्रतिशत	लागत	प्रतिशत
1	यूरिया	150	18.51	885	15.48
2	सुपर फास्फेट	50	6.18	275	4.8
3	डी.ए.पी.	50	6.18	1200	20.98
4	पोटॅश	50	6.18	360	6.29
5	एफ.वाय.डी.	500	61.72	1500	26.23
6	कीटनाशक	10	1.23	1500	26.23
योग		810	100.00	5720.00	100.00

स्त्रोत : व्यक्तिगत सर्वेक्षण

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-9(A)| September 2025

उपरोक्त सारिणीनुसार प्रति एकड़ प्रयुक्त उर्वरकों की औसत मात्रा एवं उनका अनुमानित लागत धान की कृशि के लिये प्रदर्शित किया गया है। यहां धान ही एकमात्र फसल है जिसमें खाद का प्रयोग किया जाता है रबी फसलों में खाद नही डाला जाता। क्योकि यह फसल धान की उपज के बाद मिट्टी में बची उर्वरक भाक्ति पर आश्रित होती है।

कृषि उपकरण :

ग्राम समुद्राल का मुख्य व्यवसाय कृषि है, कृषि कार्य के लिये विभिन्न उपकरणों की आवश्यकता होती है। यहां के कृषि उपकरणों की औसत संख्या 150 है। उपकरणों का विवरण निम्नानुसार है :-

ग्राम-समुद्राल कृषि उपकरण

अ.क्र.	उपकरण	संख्या	प्रतिशत
1	हल	25	16.66
2	बैलगाड़ी	50	33.34
3	उड़ावनी पंखा	60	40.00
4	ट्रेक्टर	10	6.67
5	अन्य उपकरण	05	3.33
योग		150	100.00

स्त्रोत : व्यक्तिगत सर्वेक्षण

कृषि विशेषताएँ :

सर्वेक्षित ग्राम समुद्राल में कृषि प्रतिरूप की निम्नलिखित विशेषताएँ देखने को मिलती है :-

1. निम्न उत्पादकता स्तर:

कृषि उत्पादक दर निम्न है जिसका प्रमुख कारण है सिंचाई की अपर्याप्तता, प्राचीन कृषि प्रणाली, किसानों में कृषि के प्रति लगाव कम होना।

2. कृषि जोतो का छोटा आकार:

कृषि जोतो का आकार छोटा है। यहां अधिकतम जोत का आकार 1.50 से 2.50 एकड़ तक ही है फलस्वरूप कम आकार वाले जोतो में आधुनिक उपकरण का प्रयोग दुश्कर है।

3. वर्षापर आधारित:

सर्वेक्षित ग्राम में 57. 27 प्रतिशत भाग से सिंचाई की सुविधा है शेष वर्षा पर निर्भर है।

4. जीवन निर्वाह:

सर्वेक्षित ग्राम में किसान आज भी कृषि जीवन निर्वाह के लिए करते है, व्यावसायिक दृष्टीकोण नही रखते।

5. पारम्परिक कृषि का प्रयोग:

आज भी यहां किसान कृषि के लिये पुराने तरीकों का प्रयोग करते है, जबकि आज के समय में कई उन्नत किस्म की तकनीकी उपलब्ध है।

6. सिंचाई सुविधा की अपर्याप्तता:

सर्वेक्षित ग्राम के कृशक कृषि कार्य हेतु वर्षा पर ही निर्भर है। सिंचाई की सुविधा पर्याप्त नही है।

7. एक फसली कृषि:

जून से नवम्बर माह तक ही अर्थात् वर्षा में एक ही बार कृषि से फसल उत्पादित की जाती है अर्थात् कृषि एक ही मौसम तक सीमित है।

सर्वेक्षित ग्राम में कृषि समस्या :

1.प्रति हेक्टेयर उपज का उत्पादन कम है।

2.सिंचाई सुविधा पर्याप्त नही है।

3. कृषि जोत का आकार कम है तथा जोत बिखरे एवं आकार में छोटे है।

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-9(A)| September 2025

4. केवल खाद्यान पर आधारित कृषि की जाती है।
5. उन्नत तील तकनीकी साधनों की कमी ।
6. कृषि का उद्देश्य जीवन निर्वाह है व्यापारिक नही है।
7.कृशकों की आर्थिक स्थिति निम्न है।
8. कृषि पारम्परिक ढंग से की जाती है।
9. कृषि कार्य हेतु कृशकों में उत्साह की कमीं।
10. व्यवस्थित विपणन प्रणाली का अभाव।
11. ज्यादातार किसान अशिक्षित है इसीलिये सरकारी योजनाओं की जानकारी नही रखते है।

कृषि सुझाव एवं समस्यात्मक निराकरण :

1. अधिक उपज देने वाले बीजों का प्रयोग किया जाना चाहिए।
2. रासायनिक खाद का उपयोग किया जाना चाहिए।
3. सिंचाई सुविधा का विस्तार किया जाना चाहिए।
4. वैज्ञानिक खेती प्रबंधन । किया जाना चाहिए।
5. चकबंदी किया जाना चाहिए।
6. फसल संरक्षण हेतु कीटनाशकों का प्रयोग किया जाना चाहिए।
7. दो-फसली कृषि तथा फसल चक्र हेतु कृशकों को प्रेरित करना चाहिए।
8. फसल बीमा, सहकारी विपणन की सुविधा दी जानी चाहिए।

पशुपालन :

वैज्ञानिक युग मे भी पशुओं के महत्व को कम नही आंका जा सकता है। सर्वेक्षित ग्राम में पारम्परिक ढंग से कृषि कार्य किया जाता है जिसके लिए पशुओं की आवश्यकता होती है। कुल 639 पालतू पशु पाये जाते है जिसमें दूध देने वाली गायों की संख्या 126 है जो कुल पालतू पशु का 19.72 प्रतिशत है। पालतू पशु में बकरा-बकरी भी है। दुग्ध व मांस की बिक्री की जाती है जो आर्थिक दृष्टी से महत्वपूर्ण है।

ग्राम-समुद्राल पालतू पशु (2021-22)

अ.क्र.	पशुओं का नाम	संख्या	प्रतिशत
1	बैल	195	30.67
2	गाय	126	19.72
3	भैंस	148	23.19
4	बकरी -बकरा	50	7.82
5	मुर्गी - मुर्गा	120	18.6
योग		639	100.00

स्त्रोत : व्यक्तिगत सर्वेक्षण

सामाजिक व आर्थिक दृष्टीकोण से ग्राम " समुद्राल " पिछड़ा हुआ है। यहां के लोगो का जीवन स्तर ऊंचा उठाने के लिए उपयुक्त सभी क्षेत्रों में काफी प्रयास की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. नंदे वर भार्मा, पी.आर.चौहान (1997) प्रादेशिक नियोजन एवं विकास
2. श्री एस.सी. बंसल (1998) कृषि भूगोल
3. श्री सुरेश चंद बंसल - कृषि भूगोल
4. शर्मा भारद्वाज - कृषि भूगोल रस्तोगी पब्लिकेशन्स 'गंगोत्री' शिवाजी रोड, मेरठ

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-9(A)| September 2025

5. हरिराम पटेल-छत्तीसगढ़ का विशिश्ट अध्ययन
6. पी.आर. चौहान-प्रादेशिक नियोजन एंव विकास
7. भूगोल ३ री कक्षा (बालभारती 2021) उस्मानाबाद जिला
8. उस्मानाबाद जिलेका सामाजिक और आर्थिक समालोचन (2024)